एक्सप्रेसवे बदलेगा बुंदेलखंड की भी तस्वीर, दो औद्योगिक गलियारे दिखाएंगे विकास की राह

बुंदेलखंड के लिए भी सकारात्मक संकेत है कि जहां कुछ नहीं था वहां 2938 करोड़ का निवेश आया। संभवत जुलाई में बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे का लोकार्पण हो जाएगा। उम्मीद है कि उसके बाद तेजी से क्षेत्र में निवेश आएगा। इसके लिए विभाग की ओर से भी और प्रयास किए जाएंगे।

ANURAG GUPTA

Publish: Sun, 05 Jun 2022 06:00 AM (IST)

Updated: Sun, 05 Jun 2022 07:42 AM (IST)

2,938 करोड़ के निवेश ने बुंदेलखंड की सूखी धरती में बोए आशा के बीज।

लखनऊ, जितेंद्र शर्मा। प्रदेश में औद्योगिक विकास की गति और दिशा क्या है, यह योगी सरकार की तीसरी ग्राउंड ब्रेकिंग सेरेमनी ने दिखा दिया। निस्संदेह पश्चिमी उत्तर प्रदेश आज भी निवेशकों की पहली पसंद बना हुआ है, लेकिन पूर्वांचल के उछाल ने उस बदहाल रहे बुंदेलखंड को भी ढांढस बंधा दिया है, जो क्षेत्रवार निवेश की सूची में अंतिम पायदान पर नजर आ रहा है। यहां 2,938 करोड़ रुपये के निवेश ने विकास की आस के बीज रोपे हैं। साथ ही एक राह दिखा दी है कि जब निर्माणाधीन बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे पर वाहन फर्राटा भरना शुरू करेंगे तो इसी रास्ते से निवेशक भी कदम बढ़ाते चले आएंगे।

लखनऊ के स्कूलों पर सीएम योगी के आदेश का असर नहीं, बिना फिटनेस दौड़ रहे 1,828 स्कूली वाहन

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को राजधानी से उत्तर प्रदेश की 80,224 करोड़ रुपये की औद्योगिक परियोजनाओं की आधारशिला रखी। दुनिया भर से जुटे निवेशकों ने अपनी योजना बताई कि वह किन-किन क्षेत्रों में कितना निवेश करने जा रहे हैं। निवेश परियोजनाओं के आधार पर बनी क्षेत्रवार सूची में पश्चिमांचल पहले स्थान पर है।

स्थिति यह है कि कुल निवेश में से 73.14 प्रतिशत हिस्सा पश्चिम को मिला है। दूसरे स्थान पर 11.99 प्रतिशत (9,617 करोड़ रुपये) पूर्वांचल को और तीसरे स्थान पर मध्यांचल रहा है, जहां 11.21 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ 8,997 करोड़ रुपये का निवेश आया है। वहीं, बुंदेलखंड मात्र 3.66 प्रतिशत निवेश पर रह गया। यहां सिर्फ 2,938 करोड़ रुपये की निवेश परियोजनाओं की नींव रखी गई है।

यह भी पढ़ें

Viagra Overdose: वियाग्रा के ओवर डोज से नर्क बन गई 28 वर्षीय युवक की जिंदगी, तीन माह पहले हुई थी शादी; जानें- पूरा मामला

दरअसल, यह अंचल कनेक्टिविटी से लेकर अन्य अवस्थापना सुविधाओं के दृष्टिकोण से पिछड़ा रहा है, जिसके कारण यह बदहाल ही रहा। यही वजह है कि योगी सरकार ने अपनी सभी औद्योगिक नीतियों में पिछड़े रहे पूर्वांचल और बदहाली झेलते बुंदेलखंड को विशेष रियायतें दीं। व्यवस्था दी कि निवेशक इन दो अंचलों में निवेश करेंगे तो अन्य क्षेत्रों की तुलना में अधिक अनुदान मिलेगा। सरकार के इन प्रयासों का लाभ पूर्वांचल को मिल गया, लेकिन बुंदेलखंड प्यासा ही रहा। आज के आंकड़े बुंदेलों को निराश कर सकते हैं, लेकिन निवेशकों की आहट आंखें जरूर खोलती है।

यह भी पढ़ें

UP VidhanMandal Special Session : राष्ट्रपति ने विधानभवन में संयुक्त सदन को किया संबोधित, कहा- अपवादस्वरूप भुला देना चाहिए, सदन में जो कुछ भी हुआ अमर्यादित

जानकारों का तर्क है कि पूर्वांचल एक्सप्रेसवे शुरू हो चुका है। क्षेत्र की कनेक्टिविटी मजबूत होने से निवेशकों ने उस तरफ रुख किया है, जबकि बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे अभी शुरू नहीं हो सका है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि यह एक्सप्रेसवे शुरू होने के बाद वहां की स्थिति भी सुधरेगी। इसके अलावा डिफेंस कारिडोर में निवेश के लिए बड़ी कंपनियां आगे आई हैं। यदि सरकार की योजना के मुताबिक, बुंदेलखंड एक्सप्रेसवे के किनारे भी औद्योगिक गलियारा विकसित हो गया तो इन दो गलियारों के सहारे अंचल का औद्योगिक विकास गति पकड़ सकता है।

यह भी पढ़ें

Lucknow News: लखनऊ में फर्नीचर कारखाने में लगी भीषण आग, घंटे भर की मशक्कत के बाद दमकल कर्मियों ने पाया काबू

बुंदेलखंड के लिए हैं सकारात्मक संकेत : अवस्थापना एवं औद्योगिक विकास आयुक्त अरविंद कुमार का कहना है कि रोड कनेक्टिविटी निवेशकों की प्राथमिकता में रहती है। पूर्वांचल में सबसे अधिक निवेश गोरखपुर में आया है, क्योंकि वहां पुराना औद्योगिक क्षेत्र है। निश्चित रूप से सरकार की औद्योगिक नीति में दी जा रही छूट और पूर्वांचल एक्सप्रेसवे ने निवेशकों को आकर्षित करने में बड़ी भूमिका निभाई है।